(9)

COMMON SKIN DISEASE

त्वचा के सामान्य रोग

01620
1620

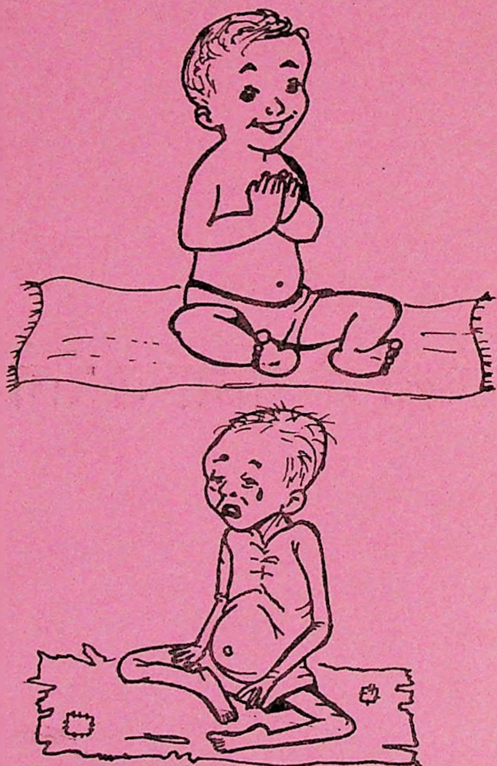

स्वास्थ्य की सूचक त्वचा

त्वचा शरीर की खिड़की के समान होती है जिसके द्वारा व्यक्ति के स्वास्थ्य की आंतरिक परिस्थितियों को देखा जा सकता है।

अच्छी तरह से पोषित व्यक्ति की त्वचा साफ, मुलायम तथा गाल गुलाबी होते हैं। कुपोषित, रक्त की कमी वाले, दुर्बल व्यक्तियों की त्वचा कांतिहीन, पीली और झुर्रीदार होती है।

(देखिए एम एम - रक्त)

त्वचा से व्यक्ति की उम्र का भी पता चलता है। युवा व्यक्तियों की त्वचा कोमल व चिकनी होती है। बूढ़े व्यक्तियों की त्वचा में झुर्रियां आ जाती हैं।

(देखिए एम एम - त्वचा)

त्वचा का पीला होना ज़िगर रोग (पीलिया) को सूचित करता है।

चेचक, खसरा (शीतला), सिफलिस, कुष्ठरोग जैसे रोग त्वचा पर विशिष्ट प्रभाव डालते हैं।

(देखिए एम एम - चेचक, खसरा, कुष्ठरोग)

COMH 321
01520

मुंहासे (यौवन-कील) (फुंसियां)

यह चेहरे की चरबीली ग्रंथियों द्वारा होने वाला संक्रमक है जिससे चेहरे पर छोटे-छोटे मुंहासे (फुंसियां) हो जाते हैं।

सामान्यत: किशोरावस्था में स्त्री व पुरुष दोनों ही समान रूप से इस रोग का शिकार होते हैं। कुछ लोग मानते हैं कि हारमोन्स की अव्यवस्था के कारण यह रोग होता है।

सामान्य राय यह है कि मुंहासे सफाई की ओर ध्यान न देने के कारण होते हैं। यह सच हो सकता है क्योंकि हमेशा साबुन से मुंह धोने से त्वचा पर मुंहासे नहीं होते।

वसायुक्त, तैलीय पदार्थ, चॉकलेट, मूंगफली के सेवन से मुंहासे अधिक होते हैं। मुंहासों का संबंध भावनात्मक तनावों से भी है जो किशोरावस्था में विशेष रूप से होते हैं।

मुंहासों को खुजाना या दबाकर फोड़ने की आदत खराब होती है जिससे यह रोग और अधिक फैलता है।

मुंहासों की रोकथाम का प्रबंध

मुंहासों की रोकथाम का सबसे अच्छा इलाज त्वचा की सफाई है।

नर्म साबुन तथा गुनगुने पानी से दिन में दो-तीन बार चेहरे को धोकर हल्का रगड़कर साफ करना चाहिए। नर्म तौलिये से चेहरे को धीमे व ठीक से रगड़कर साफ करना चाहिए। पूरे चेहरे पर तौलिया घुमाना चाहिए। यदि बर्फ मिल जाए तो उसे चेहरे पर कुछ मिनट तक धीरे-धीरे रगड़ना चाहिए। पानी सूखने के बाद त्वचा पर संकोचक जैसे चाय की पत्ती, कालामंसी का रस, ककड़ी का टुकड़ा या सबीला के पत्ते का टुकड़ा लगाना चाहिए।

मुंहासों को कभी नहीं खुरचना या दबाकर फोड़ना चाहिए।

इसके उपचार के लिए सहनशीलता की बहुत आवश्यकता होती है क्योंकि इसके दूर होने में समय लगता है।

विटामिन-सी से भरपूर बहुत से पेय पदार्थ और रसों जैसे कालामंसी का रस अधिक मात्रा में पीना चाहिए।

इम्पीटिगो

गरीब परिवारों के छोटे बच्चों में सामान्य रूप से पाया जाने वाला यह एक चर्म-रोग है जो गर्म मौसम में नहाने के लिए जब पानी की कमी होती है तब अधिक फैलता है। इस रोग का वर्गीकरण बैक्टीरिया (विषाणु) द्वारा फैलने वाले छूत की बीमारी के रूप में किया गया है।

इस रोग के शिकार बच्चों को अलग रखना चाहिए तथा इन्हें दूसरों के साथ सोने या खेलने से मना करना चाहिए। इनके कपड़े अलग से धोने चाहिए और उन्हें खुली धूप में सुखाना चाहिए।

इस रोग से केवल बाहरी त्वचा ही प्रभावित होती है परन्तु यह तेजी से पूरे शरीर में फैल जाता है। विशेषकर नाक और मुंह के आसपास छाले उभर आते हैं जो एक सें.मी. या उससे छोटे आकार में फफोले के समान दिखाई देते हैं। छालों के फूटने पर पीले रंग के छिलके बन जाते हैं। इनके चारों ओर किनारों पर जलन होने लगती है।

इम्पीटिगो आसानी से शरीर के अन्य भागों में और दूसरे लोगों में संक्रमित उंगलियों तथा वस्तुओं द्वारा फैलता है।

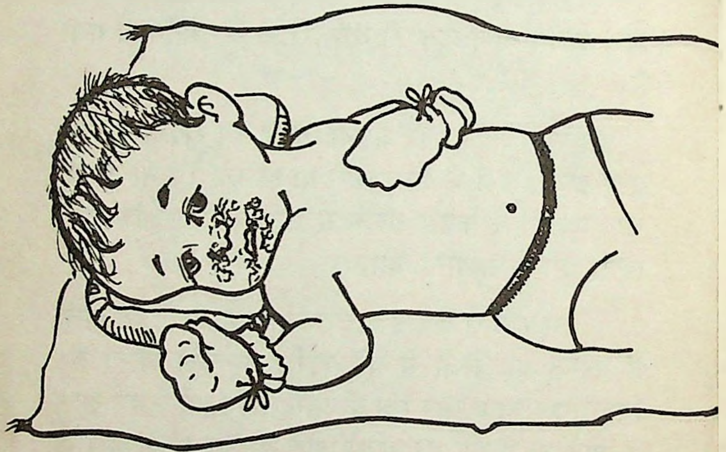

इम्पीटिगो की रोकथाम के प्रबंध

इस रोग को संक्रमित व्यक्ति के शरीर में तथा अन्य व्यक्तियों में फैलने से रोकने के उपाय पहले करने चाहिए। समझदार बच्चों को इस बात की हिदायत देनी चाहिए कि वे अपने घाव न खुरचें और वे अपने हाथ समय-समय पर धोते रहें। छोटे बच्चों के हाथों में दस्ताने पहनाने चाहिए तथा उन्हें बदलते रहना चाहिए। उन दस्तानों को उबलते पानी में धोना चाहिए और धूप में सुखाना चाहिए।

उबाल कर ठंडा किये गयेपानी और साबुन से रोग संक्रमित भागों को धोना चाहिए। बाद में उस स्थान को गर्म कपड़े से दबाकर सुखाकर धीरे-धीरे फफोलों का छिलका निकालना चाहिए।

पीड़ादायक स्थानों पर जिनटेन वायलेट (नीली दवा) लगानी चाहिए या कीटाणुनाशक मरहम लगाना चाहिए।

रोग का संक्रमण शरीर के अन्य भागों में हो सकता है तथा उसके और अधिक फैलने के लक्षण भी हो सकते हैं, इसीलिए कीटाणुनाशक दवा खाने के लिए दिया जाना ठीक रहेगा।

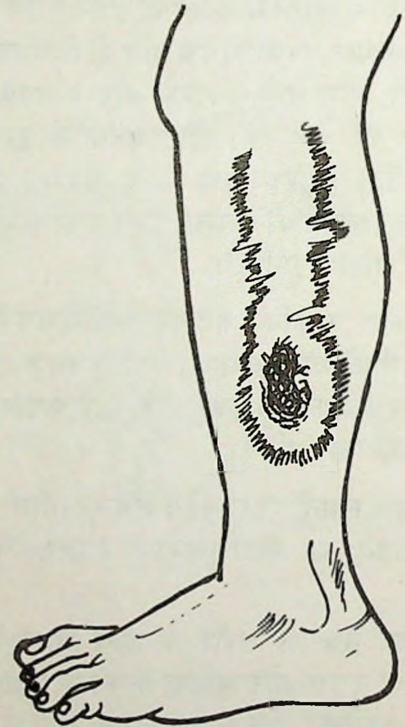

विसर्प (इरिसिपलस)

यह एक बहुत ही पीड़ादायक रोग है जो त्वचा के लसिका (लिंफेटिक्स) द्वारा होता है। इसके सामान्य प्रभावी अंग चेहरा, होठ व नाक के आसपास, पेट व छाती का हिस्सा और हाथ-पैर हैं। नवजात शिशु तथा बूढ़े या दुर्बल व्यक्तियों में यह रोग अधिक होता है।

विसर्प रोग त्वचा पर थोड़े-से उभरे हुए लाल रंग के चकत्ते के रूप में दिखाई देता है। इस रोग में तेजी से फैलने के गुण होने के कारण चकत्ते की लाल लकीर बाहर की ओर रेंगते सांप की तरह फैलती दिखाई देती है। लसिका की गांठें पास-पास में बडी हो जाती हैं तथा रोगी को बुखार आ जाता है।

विसर्प की रोकथाम के प्रबंध

इस रोग की तेजी से फैलने की प्रवृत्ति के कारण इसके निदान के लिए खाने वाली कीटाणनाशक दवाएं जैसे पेनिसिलिन सुझाई जाती है।

त्वचा के घाव तथा इम्पीटिगो की तरह अन्य चर्मरोगों के लिए प्रयोग में लाये जाने वाले इलाज की तरह इस रोग का भी सामान्य इलाज किया जा सकता है।

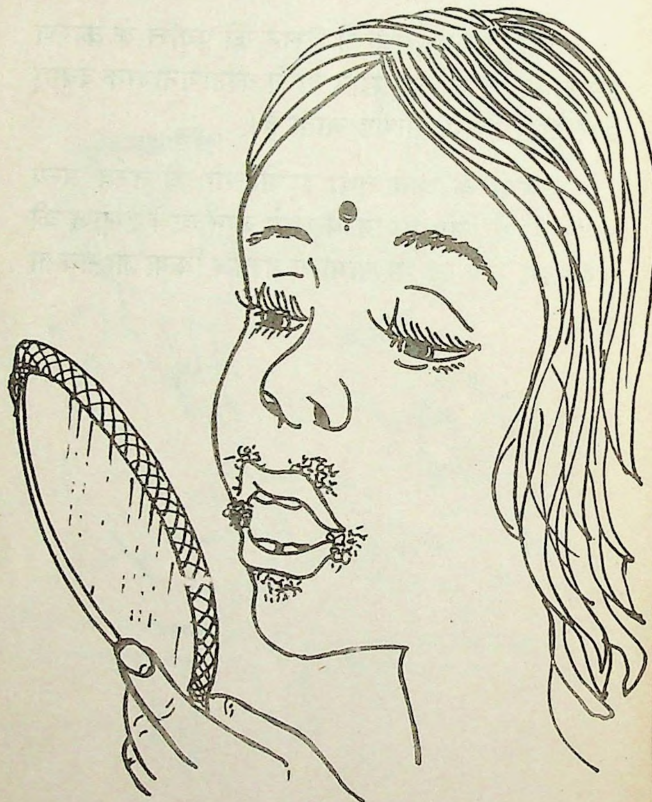

साधारण दाद

दाद कई प्रकार का होता है। इसका सामान्य प्रकार साधारण दाद है जो आम तौर पर होठों के चारों ओर सांस के संपर्क रोग के कारण ज्वर के बाद होता है। इसलिए और फफोले के रूप में दिखाई देने के कारण इन्हें ज्वर या सर्दी-पीड़क छाले कहा जाता है। इस रोग का कारण वायरस माने जाते हैं।

इस रोग से शुरु में त्वचा के छोटे-छोटे चकत्ते दिखाई देते हैं जो जलन के कारण बढ़ते हैं और बाद में फफोले या छालों में बदल जाते हैं। यदि ये मुंह के चारों ओर फैल जाते हैं तो इससे मुंह खोलने में दर्द होता है। ये फफोले सूखने के बाद खुजलाते हैं।

साधारण दाद की रोकथाम के प्रबंध

नियमानुसार तो इन पीड़ादायक छालों को वैसे ही छोड़ देना चाहिए। इतना दर्द तो सहा जा सकता है तथा ये बिना इलाज के एक आध सप्ताह में ही ठीक हा जाते हैं।

गर्म कपड़े से सेंकने से इसका दर्द दूर हो सकता है।

होठों के आसपास ये छाले हुए हों या वे संक्रमित हों तो कीटाणुनाशक मरहम लगाना फायदेमंद होता है। इससे छाले सूखने के बाद त्वचा या होठों को फटने से बचा जा सकता है। जिनटेन वायलेट लगाकर भी इसे कम किया जा सकता है।

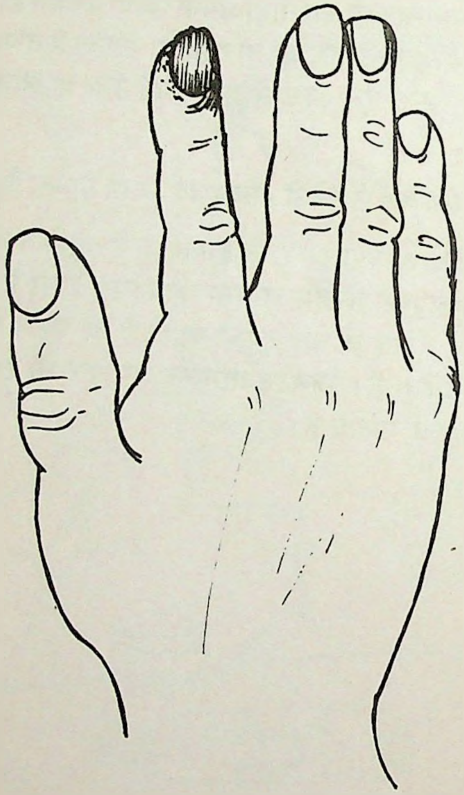

फफूंद संक्रमण

फफूंदी में यह विशेष गुण होता है कि वह बाल, नाखून तथा त्वचा की ऊपरी पर्त (एपिडर्मिस) के मुख्य घटकों को खत्म कर सकती है। इस प्रकार फफूंदी नाखून, बाल को तथा त्वचा की कठोर कोशिकाओं को नष्ट कर सकती है। फफूंद बहुत कम ही त्वचा के निचले स्तर या पर्त के जीवित उतकों को प्रभावित करती है।

[देखिए एम एम - गोलकृमि (टीनीया)]

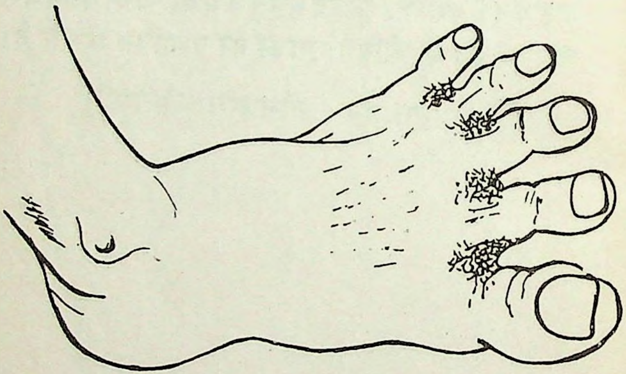

परजीवी रोग

इसका सबसे सामान्य उदाहरण गीली खाज है जो केकड़े के समान दिखने वाले बहुत ही छोटे जीव द्वारा होती है जो त्वचा की निचली सतह (पर्त) में चिपका होता है तथा वहीं अपने अण्डे देता है।

01620
COMH 321

त्वचा रसौली
कर्कट रोग

कई वर्षों तक सीधे धूप के संपर्क में रहने के कांरण त्वचा का कर्कट रोग होता है। विशेषकर किसान और मछुआरों में त्वचा की रसौली (ट्यूमर) होती है जो आगे चलकर कैंसर में भी बदल सकती है। इस प्रकार के कैंसर का विकास सामान्यत: बहुत धीरे होता है। गोरी चमड़ी के व्यक्तियों को चर्म-कैंसर का भय अधिक हो सकता है।

मुख्यत: कर्कट रोग सिर, गर्दन तथा कान में होता है क्योंकि ये अंग ही सूर्य के प्रकाश के सीधे संपर्क में आते हैं।

प्रारंभ में कर्कट रोग त्वचा के अतिरिक्त विकास के रुप में दिखाई देता है जो बाद में अल्सर के रुप में फैलने के गुण रखते हैं।

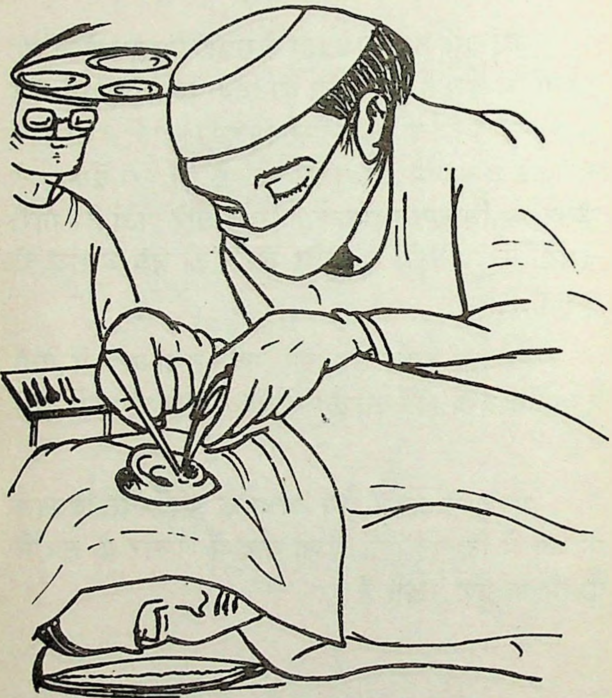

कर्कट रोग से बचने के प्रबंध

इसके प्रबंध के लिए सबसे पहले धूप से बचना चाहिए। किसानों और मछुआरों के लिए ऐसा करना मुश्किल है क्योंकि इन्हें अपनी जीविका के लिए धूप, बारिश और खुली हवा में ही काम करना पड़ता है। भूख या कैंसर से मरने के चुनाव में फिलहाल भूख से मरना ज्यादा दुःखदायी है। ऐसे विचार अक्सर सुनने में आते हैं।

इसका विशिष्ट प्रकार का इलाज तो केवल दवाखानों में ही किया जा सकता है जिसके लिए आपरेशन और या रेडिएशन की भी जरुरत पड़ सकती है।

प्रश्न

1. अच्छी तरह पोषित, हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति की त्वचा कैसी दीखती है?
2. कुपोषित, बीमार व्यक्ति की त्वचा कैसी दीखती है?
3. मुहांसे क्या हैं? इसका इलाज बतलाइए।
4. इम्पीटिगो क्या है? इसका इलाज बतलाइए।
5. विसर्प क्या है? इसका इलाज बतलाइए।
6. साधारण दाद क्या है? इसका इलाज बतलाइए।
7. फफूंद संक्रमण क्या है? इसका इलाज बतलाइए।
8. परजीवी रोग क्या है? इसका इलाज बतलाइए।
9. कर्कट रोग क्या है? इसका इलाज बतलाइए।

त्वचा शरीर का आइना होती है।

त्वचा व्यक्ति के व्यवसाय, पोषण की स्थिति तथा स्वास्थ्य के बारे में सूचना देती है।

कुछ खास प्रकार के रोगों के लक्षण त्वचा पर दिखाई देते है।

इस श्रृंखला के शीर्षक

1. श्वासनली निमोनिया तथा निमोनिया
2. सामान्य आंत्र परजीवी
   (गोल-कृमि और सूचि-कृमि)
3. पोलियो, बाल पक्षाघात, पोलियोमैलिटिस
4. कान
5. आंखें
6. क्षयरोग तथा क्षयरोग की रोकथाम
7. दांत तथा मसूड़े
   दांतों की सामान्य देखभाल
8. कुष्ठरोग
9. त्वचा के सामान्य रोग
10. खुजली

Published by the Catholic Hospital Association of India,
157/6, Staff Road, Secunderabad-500 003